D.El.Ed. IInd Sem

Subject :- S.St.

Topic :- अपरदन

अपरदन एक गतिशील क्रिया है जो विभिन्न रूपों में सम्पन्न होती है। अपरदन की क्रिया में अपरदन के कारकों अपक्षय के परिणामस्वरूप निर्मित शैल-चूर्ण को परिवहन कर निक्षेपित करते हैं। अपरदन की क्रिया के फलस्वरूप चट्टानी टुकड़े स्वयं भी टकराकर टूटते-फूटते हैं तथा सम्पर्क में आने वाले धरातल को भी खुरचते हैं। इस प्रक्रिया में यांत्रिक एवं रासायनिक दोनों ही प्रकार का अपरदन होता है। अपरदन में क्रियाशील शक्तियाँ शैलों के छोटे-छोटे अंशों को बहाकर ले जाती हैं। तथा इन्हें अन्यत्र निक्षेपित कर देती हैं। इस निक्षेप से अनेक नवीन स्थलाकृतियों का जन्म होता है। अपरदन एक गतिशील क्रिया है। इसके सम्पादन में अपक्षय (स्थिर क्रिया) परिवहन और निक्षेपण क्रियाएँ अपना विशेष योगदान देती हैं।

अपरदन के मुख्य अभिकर्ता निम्नलिखित हैं —

1. बहता हुआ जल-नदी
2. पवन
3. हिमनद
4. अधोभौमिक जल (भूमिगत जल)
5. समुद्री लहर।

Thankyou

Scanned with CamScanner